भारत सरकार

जनजातीय कार्य मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 5510

उत्तर देने की तारीख 03.04.2025

जनजातीय संस्कृति का संरक्षण

+5510. श्रीमती मालविका देवी:

क्या **जनजातीय कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सरकार द्वारा जनजातीय संस्कृति और त्योहारों के संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं;

(ख) क्या ऐसा कोई कार्यक्रम है जो जनजातीय समुदायों को अपनी संस्कृति, भाषाओं और उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित करता है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) आम जनता के बीच जनजातीय संस्कृति और भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए वर्ष में कितनी बार उक्त कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं; और

(घ) जनजातीय समुदायों को उनकी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देने में सहायता देने के लिए क्या प्रोत्साहन या योजनाएं शुरू की गई हैं?

उत्तर

जनजातीय कार्य राज्यमंत्री

(श्री दुर्गादास उइके)

(क) से (घ): जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, केंद्र प्रायोजित योजना 'जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (टीआरआई) को सहायता' के अंतर्गत राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों द्वारा प्रस्तुत वार्षिक कार्य योजना के आधार पर राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों में 29 जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (टीआरआई) को वित्तीय सहायता प्रदान करता है, जो जनजातीय कार्य मंत्रालय के सचिव की अध्यक्षता वाली शीर्ष समिति के अनुमोदन के अधीन है। योजना के अंतर्गत, अवसंरचनात्मक आवश्यकताओं से संबंधित प्रस्तावों, अनुसंधान एवं प्रलेखन गतिविधियों और प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रमों, जनजातीय त्योहारों के आयोजन, अनूठी सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए यात्राओं और जनजातियों द्वारा आदान-प्रदान यात्राओं का आयोजन किया जाता है, ताकि उनकी सांस्कृतिक प्रथाओं, भाषाओं और अनुष्ठानों को संरक्षित और प्रसारित किया जा सके। टीआरआई मुख्य रूप से राज्य सरकार/संघ राज्यक्षेत्र प्रशासन के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन संस्थान हैं। योजना के अंतर्गत, जनजातीय संस्कृति के संरक्षण के लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ शुरू की गई हैं:

1. मंत्रालय ने जनजातीय लोगों के वीरतापूर्ण और देशभक्तिपूर्ण कार्यों को मान्यता देने तथा क्षेत्र की समृद्ध जनजातीय सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए 10 राज्यों में 11 जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालयों को मंजूरी दी है। इनके अलावा, विभिन्न जनजातियों के जीवन और संस्कृति से संबंधित दुर्लभ कलाकृतियाँ, पोशाकें, आभूषण, हथियार आदि प्रदर्शित करने के लिए नृवंशविज्ञान संग्रहालयों को भी मंजूरी दी गई है।

2. जनजातीय शोध संस्थान राष्ट्रीय जनजातीय शिल्प मेला, राष्ट्रीय/राज्य जनजातीय नृत्य महोत्सव, कला प्रतियोगिता, जनजातीय चित्रकला पर कार्यशाला-सह-प्रदर्शनी और राज्य स्तरीय जनजातीय कवि और लेखक सम्मेलन जैसे विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इसके अलावा मंत्रालय जनजातीय मेलों और त्यौहारों जैसे तेलंगाना की कोया जनजाति द्वारा आयोजित "मेदाराम जात्रा", नागालैंड के हॉर्नबिल महोत्सव, झारखंड के सरहुल महोत्सव, गोवा के लोकोत्सव और मिजोरम के पावल कुट त्यौहार आदि के आयोजन के लिए निधियां मुहैया कराता है।

3. जनजातीय भाषाओं के संरक्षण सहित समृद्ध जनजातीय सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए श्रव्य दृश्यों वृत्तचित्रों सहित शोध अध्ययन/पुस्तकों का प्रकाशन/ दस्तावेजीकरण।

4. जनजातीय चिकित्सकों द्वारा अपनायी गयी स्वदेशी प्रथाओं और औषधीय पौधों, जनजातीय भाषाओं, कृषि प्रणाली, नृत्य और चित्रकला, साहित्यिक उत्सवों का आयोजन, जनजातीय लेखकों/लेखिकाओं द्वारा लिखित पुस्तकों का प्रकाशन, अनुवाद कार्य और साहित्य प्रतियोगिता आदि का अनुसंधान और दस्तावेजीकरण। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप बहुभाषी शिक्षा (एमएलई) उपाय के तहत जनजातीय भाषाओं में कक्षा 1, 2 और 3 के छात्रों के लिए द्विभाषी शब्दकोश, त्रिभाषी प्रवीणता मॉड्यूल, प्रवेशिकाएं (प्राइमर) तैयार करना। जनजातीय भाषाओं में वर्णमाला, स्थानीय कविताएँ और कहानियाँ प्रकाशित करना। जनजातीय साहित्य को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न जनजातीय भाषाओं पर पुस्तकें, पत्रिकाएँ प्रकाशित करना। जनजातीय लोक परंपरा के संरक्षण और संवर्धन के लिए विभिन्न जनजातियों की लोकगीतों और लोककथाओं का दस्तावेजीकरण करना। मौखिक साहित्य (गीत, पहेलियाँ, गाथाएँ आदि) एकत्र करना।

5. मंत्रालय ने एक खोज योग्य डिजिटल रिपोजिटरी विकसित की है, जहाँ सभी शोध पत्र, पुस्तकें, रिपोर्ट और दस्तावेज, लोकगीत, फोटो/वीडियो अपलोड किए जाते हैं। रिपोजिटरी को https://repository.tribal.gov.in/ (जनजातीय डिजिटल दस्तावेज़ रिपोजिटरी) पर देखा जा सकता है।

6. भारत सरकार ने सभी जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित करने, स्वतंत्रता संग्राम और सांस्कृतिक विरासत में उनके योगदान को याद करने और जनजातीय क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास के प्रयासों को फिर से सक्रिय करने के लिए 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित किया है। जनजातीय कार्य मंत्रालय अन्य केंद्रीय मंत्रालयों, राज्य सरकारों और अन्य संस्थानों के साथ मिलकर 2021 से अपने जनजातीय लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास का जश्न मना रहा है।

7. जनजातीय भाषाओं के संरक्षण और अनुसूचित जनजाति के छात्रों के बीच सीखने की उपलब्धि के स्तर को बढ़ाने के लिए द्विभाषी प्रवेशिकाओं (प्राइमरों) का विकास। विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा कई भाषा प्राइमर विकसित किए गए हैं।

8. जनजातीय महिला स्वयं सहायता समूह सहित जनजातीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

9. ट्राइफेड जनजातीय उत्पादकों के आधार का विस्तार करने के लिए राज्यों/जिलों/गांवों में सोर्सिंग स्तर पर नए कारीगरों और नए उत्पादों की पहचान करने के लिए राष्ट्रीय स्तर और राज्य स्तर पर आदि महोत्सव उत्सव और जनजातीय कारीगर मेलों (टीएएम) का आयोजन भी करता है।

इसके अलावा, संस्कृति मंत्रालय भारत की विविध संस्कृति की सुरक्षा और संरक्षण के लिए अपने बड़े अधिदेश के हिस्से के रूप में आदिवासी संस्कृति सहित संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए नोडल मंत्रालय है। पूरे देश में आदिवासी संस्कृति सहित लोक कला और संस्कृति के विभिन्न रूपों की सुरक्षा, प्रचार और संरक्षण के लिए, संस्कृति मंत्रालय ने 1985-86 के दौरान देश में सात आंचलिक सांस्कृतिक केंद्र (जेडसीसी) स्थापित किए हैं, जिनके मुख्यालय पटियाला, नागपुर, उदयपुर, प्रयागराज, कोलकाता, दीमापुर और तंजावुर में हैं। जनजातीय संस्कृति को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए संस्कृति मंत्रालय के आंचलिक सांस्कृतिक केंद्रों (जेडसीसी) के माध्यम से हॉर्नबिल महोत्सव, ऑक्टेव, जनजातीय नृत्य महोत्सव, आदि बिंब, आदि सप्त पल्लव, आदि लोक रंग, आदिवासी महोत्सव, राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव आदि जैसे विभिन्न उत्सव आयोजित किए जाते हैं।

इसके अलावा, जनजातीय कार्य मंत्रालय जनजातीय कला, संस्कृति और हस्तशिल्प को संरक्षित करने और बढ़ावा देने तथा देश भर में जनजातीय समुदायों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए ट्राइफेड के माध्यम से "प्रधानमंत्री जनजातीय विकास मिशन" (पीएमजेवीएम) योजना को लागू कर रहा है। ट्राइफेड राष्ट्रीय स्तर पर जनजातीय उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए दिल्ली में प्रतिवर्ष "आदि महोत्सव" का आयोजन करता है। ट्राइफेड अपने ट्राइब्स इंडिया आउटलेट्स और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से जनजातीय उत्पादों का खुदरा विपणन करता है। यह देश के विभिन्न हिस्सों में आदि बाज़ार, आदि चित्र आदि जैसी प्रदर्शनियाँ भी आयोजित करता है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री जनजातीय विकास मिशन (पीएमजेवीएम) की योजना के तहत, ट्राइफेड जनजातीय समुदायों के लिए आजीविका के अवसर पैदा करने के लिए जनजातीय कारीगरों को सूचीबद्ध करता है और उनसे विभिन्न जनजातीय उत्पादों की खरीद करता है।

इसके अलावा, जनजातीय कार्य मंत्रालय केन्द्रीय क्षेत्र की योजना 'जनजातीय अनुसंधान, सूचना, शिक्षा, संचार और कार्यक्रम (टीआरआई-ईसीई)' का क्रियान्वयन कर रहा है, जिसका उद्देश्य समृद्ध जनजातीय सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना, सूचना का प्रसार और जागरूकता पैदा करना है, जिसमें जनजातीय शिल्प और खाद्य महोत्सव, खेल, संगीत, नृत्य और फोटो प्रतियोगिताएं, विज्ञान, कला और शिल्प प्रदर्शनी, कार्यशालाएं, सेमिनार, मंत्रालय और राज्यों द्वारा वृत्तचित्र फिल्मों का निर्माण, महत्वपूर्ण अध्ययनों पर प्रकाश डालने वाले प्रकाशन, जनजातीय समुदायों के ऐतिहासिक पहलुओं का दस्तावेजीकरण, जनजातीय कार्य मंत्रालय (एमओटीए) और राज्य विभागों की उपलब्धियों के अलावा नियमित अंतराल पर अन्य आवश्यक प्रचार शामिल हैं।

*****